

an>

Title: Need to set up a National Fund for Welfare of artists of rural areas in the country.

श्री दिलीपकुमार मनसुखलाल गांधी (अहमदनगर) : अध्यक्ष महोदया, आपके माध्यम से मैं एक बहुत महत्वपूर्ण विषय की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। अपने देश की हजारों वर्षों की संस्कृति है। इस संस्कृति को आबाद रखने का काम अलग-अलग कलाकारों ने किया। इसके कारण देश में हमने भारत रत्न पुरस्कार दिए, पद्म श्री, पद्म भूषण आदि पुरस्कार दिए। अलग-अलग पुरस्कार देकर अपनी संस्कृति को आबाद रखने का काम किया। लेकिन संस्कृति मंत्रालय के अध्ययन से वृद्ध कलाकारों को पेंशन देने की योजना शुरू की गई और उन्हें 3,000 रुपये से लेकर 14,000 रुपये तक पेंशन दी जाती है। गत साल बहुत कम बजट इसके लिए रखा गया था, जिस कारण मेरे अहमदनगर जिले से केवल दो लोगों को ही पेंशन मिली। जबकि मैंने पिछले साल अपने क्षेत्र से 100 लोगों का प्रोजेक्ट दिया था और इस साल 200 लोगों का प्रोजेक्ट दिया है। मेरा आग्रह है कि इस संस्कृति आबादी को जीवित रखने के लिए जिन-जिन लोगों ने योगदान दिया है, उन्हें पूरा हक दिया जाए। जिससे उन्हें भी लगे कि सरकार ने मुझे नवाज़ा है, मेरी कला की सराहना की है। अगर ऐसा होगा तो यह संस्कृति जीवित रहेगी और आगे भी चलेगी। जिस तरह से वित्त मंत्री जी ने इस साल के बजट में 60 साल से ज्यादा उम्र के लोगों को 1,000 रुपये पेंशन देने की योजना शुरू की है, उसी तरह इन कलाकारों के लिए 500 करोड़ रुपये का प्रावधान पेंशन के रूप में देने का काम किया जाए। इसलिए मैं वित्त मंत्री जी और संस्कृति मंत्री जी से आग्रह करता हूँ कि बजट में ज्यादा एलोकेशन करके ज्यादा से ज्यादा लोगों को पेंशन देने का प्रावधान किया जाए।

माननीय अध्यक्ष: श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत दिलीप गांधी द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करते हैं।